

National Curriculum Framework 2005

- **Strengthening a national system of education in a pluralistic society.**
- **Reducing the curriculum load based on insights provided in 'Learning Without Burden'**
- **Systemic change in tune with curricular reforms. Curricular practices based on the values enshrined in the Constitution, such as social justice, equality, and secularism.**

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005
- शिक्षा की राष्ट्रीय व्यवस्था को बहुलतावादी समाज में मजबूती प्रदान करना।
 - शिक्षा विना बोझ के' की सूझ के आधार पर पाठ्यचर्या के बोझ को कम करना।
 - पाठ्यचर्या सुधार से सुसंगत व्यवस्थागत परिवर्तन करना।
 - संविधान में उल्लिखित मूल्यों; जैसे- सामाजिक न्याय, समता एवं धर्मनिरपेक्षता पर आधारित पाठ्यचर्या अभ्यास।

- **Ensuring quality education for all children.**
- **Building a citizenry committed to democratic practices, values, sensitivity towards gender justice, problems faced by the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes, needs of the disabled, and capacities to participate in economic and political processes.**

- सभी बच्चों के लिए गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना।
- ऐसे नागरिक वर्ग का निर्माण जो लोकतांत्रिक व्यवहारों, मूल्यों के प्रति कटिवद्ध हो, लैंगिक न्याय के प्रति, अनुसूचित जातियों-जनजातियों और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की समस्याओं के प्रति संवदनशील हो तथा उसमें राजनीतिक एवं आर्थिक प्रक्रियाओं में भाग लेने की क्षमता हो।

Learning and Knowledge

- **Reorientation of our perception of learners and learning**
- **A holistic approach to the development and learning of students.**
- **Creating an inclusive environment in the classroom for all students.**
- **Learner engagement in the classroom for all students.**
- **Learner engagement for construction of_**
knowledge and fostering of
creativity. Active learning through
the experiential mode. Adequate
room for voicing children's
thoughts, curiosity, and questions
in curricular practices.
- **Connecting knowledge across**
disciplinary boundaries to provide a
broader frame work for insightful
construction of knowledge.

सीखना और ज्ञान

- अध्यापन और अध्ययन संबंधी हमारी समझ का पुनः अभिमुखीकरण
- विद्यार्थियों के विकास एवं अधिगम के संबंध में सर्वांगीण दृष्टिकोण।
- कक्षा में सभी विद्यार्थियों के लिए समावेशी तादातरण तैयार करना।
- ज्ञान निर्माण में विद्यार्थियों की सहभागिता और रचनात्मकता को बढ़ावा।
- प्रयोगात्मक माध्यमों द्वारा सक्रिय शिक्षण।
- पाठ्यचर्या की प्रक्रियाओं में बच्चों की सोच, जिज्ञासा और प्रश्नों के लिए पर्याप्त स्थान।
- ज्ञान को अनुशासनिक सीमाओं के पार जोड़ते हुए ज्ञान के अन्तर्दृष्टिपूर्ण निर्माण के लिए एक व्यापक ढाँचा प्रदान करना।

- Forms of learner engagement- observing, exploring, discovering, analysing, critical reflection, etc are as important-as-the-content-of knowledge.
- Activities for developing critical perspectives on socio-cultural realities need to find space in curricular practices.
- Local knowledge and children's experiences are essential components of text books and pedagogic practices.
- Children engaged in undertaking environment-related projects may contribute to generation of knowledge that could help create a transparent public database on India's environment.
- The school years are a period of rapid development, with changes and shifts in.
- children's capabilities, attitudes and interests that implications for choosing and organising the content and process of knowledge.

- विद्यार्थियों की सहभागिता के क्षेत्र- अवलोकन, अन्वेषण, विश्लेषणात्मक विमर्श आदि भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितनी कि ज्ञान की विषय-वस्तु।
- सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ पर विवेचनात्मक परिप्रेक्ष्य को विकसित करने वाली प्रक्रियाओं को पाठ्यचर्या में स्थान देने की आवश्यकता।
- स्थानीय ज्ञान एवं बच्चों के अनुभव पाठ्यपुस्तकों और अध्यापन प्रक्रियाओं के महत्वपूर्ण अंग हैं।
- पर्यावरण संबंधी परियोजनाओं से जुड़े विद्यार्थी ऐसे ज्ञान के निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं जो भारतीय पर्यावरण का एक पारदर्शी, सार्वजनिक आंकड़ा-आधार तैयार करने में सहायक हो।
- स्कूल के वर्ष बच्चों की तीव्र वृद्धि का दौर होता है, -
क्षमताओं, अभिरूचियों व दृष्टिकोण में काफी बदलाव आते हैं। इसलिए विषयवस्तु के चनाव एवं व्यवस्था को तथा ज्ञान निर्माण की प्रक्रियाओं को उनके हिसाब से अनुकूलित करना चाहिए।

Curricular Areas, School Stages and Assessment

Language

- Language skills speech and listening, reading and writing - cut across school subjects and disciplines. Their foundational role in children's construction of knowledge right from elementary classes through senior secondary classes need to be recognised.

पाठ्यचर्या के क्षेत्र, स्कूल की

अवस्थाएँ और आकलन

भाषा

- लिखने-बोलने, सुनने एवं पढ़ने की भाषिक क्षमताएँ स्कूल के सभी विषयों और अनुशासनों के शिक्षण से विकसित होती हैं। प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च माध्यमिक स्तर तक बच्चों के ज्ञान निर्माण में उनके बुनियादी महत्व को समझना आवश्यक है।

- A renewed effort should be made to implement the three-language formula, emphasising the recognition of children's home language (s) or mother tongue (s) as the best medium of instruction. These include tribal languages.
- English needs to find its place along with other Indian languages.

- त्रिभाषा फॉर्मूले को पुनः लागू किए जाने की दिशा में काम किया जाना चाहिए, जिसमें बच्चों की घरेलू भाषाओं और मातृभाषाओं को शिक्षण के माध्यम के रूप में मान्यता देने की जरूरत है। इनमें आदिवासी भाषाएँ भी शामिल हैं।
- अंग्रेजी को अन्य भारतीय भाषाओं के बीच स्थान दिए जाने की आवश्यकता है।
- भारतीय समाज के बहुभाषात्मक प्रकृति को स्कूली जीवन की समृद्धि के लिए संसाधन के रूप में देखा जाना चाहिए।

Mathematics

- Mathematisation (ability to think logically, formulate and handle abstractions) rather than 'knowledge's of mathematics (formal and mechanical procedures) is the main goal of teaching mathematics.
- The teaching of mathematics should enhance children's ability to think and reason, to visualise and handle abstractions, to formulate and solve problems. Access to quality mathematics education is the right is the right-of-every-child

गणित

- गणित-शिक्षण का मुख्य लक्ष्य गणितीकरण (तार्किक ढंग से सोचने, अमूर्तनों का निर्माण करने तथा संचालित करने की योग्यताओं का विकास) देना चाहिए न कि गणित का ज्ञान (औपचारिक एवं यांत्रिक प्रक्रियाओं का ज्ञान)।
- तार्किक ढंग से सोचने की क्षमता।
- गणित की शिक्षा से बच्चों की तर्क, सोचने की, अमूर्तनों के निर्माण तथा दृष्टिकरण की क्षमताओं एवं बच्चों में समस्या सुलझाने की क्षमता का विकास- हो। गणित की बेहतर शिक्षा का हक हर बच्चे को है।

Vision for School Mathematics

- Children learn to enjoy mathematics rather than fear it
- Children learn important mathematics : Mathematics is more than formulas and mechanical procedures.
- Children see mathematics as something to talk about, to communicate through, to discuss among themselves, to work together on.
- Children pose and solve meaningful problems.
- Children use abstractions to perceive relationships, to see structures, to reason out things, to argue the truth or falsity of statements.

स्कूली-गणित का दर्शन

- बच्चे गणित से भयभीत होने की बजाए उसका आनंद उठाए।
- बच्चे महत्वपूर्ण गणित सीखें; गणित में सूत्रों व यांत्रिक प्रक्रियाओं से आगे भी बढ़ते रहें।
- बच्चों को ऐसा विषय मानें जिस पर वे बात कर सकते हैं, जिससे संप्रेषण हो सकता है, आपस में जिस पर चर्चा कर सकते हैं और जिस पर साथ-साथ काम कर सकते हैं।
- बच्चे सार्थक समस्याएँ उठाएँ और उन्हें हल करें।
- बच्चे अमूर्त का प्रयोग संबंधों को समझने, संरचनाओं को देख पाने और चीजों का विवेचन करने, कथनों की सत्यता या असत्यता को लेकर तर्क करने में कर पाएँ।

- Children understand the basic structure of Mathematics: Arithmetic, algebra, geometry and trigonometry, the basic content areas of school Mathematics, all offer a methodology for abstraction, structuration and generalisation.
- Teachers engage every child in class with the conviction that everyone can learn mathematics.
- Good science education is true to the child, true to life and true to science. This simple observation leads to the following basic criteria of validity of a science curriculum:

- बच्चे गणित की मूल संरचना को समझें: अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित त्रिकोणमिति। स्कूल गणित के सभी मूल तत्व अमूर्त की प्रणाली, संघटन और सामान्यीकरण के लिए पद्धति मुहैया कराते हैं।
- अध्यापक कक्षा में प्रत्येक बच्चे के साथ इस विश्वास के आधार पर काम करे कि प्रत्येक बच्चा गणित सीख सकता है।
- विज्ञान शिक्षा का स्वरूप तय करते हुए इन विविध पहलुओं को ध्यान में रखने की जरूरत है। अच्छी विज्ञान शिक्षा बच्चे, जीवन व विज्ञान के प्रति ईमानदार होती है। यह सरल निष्कर्ष विज्ञान पाठ्यचर्या के निम्नलिखित वैध मानकों की ओर इंगित करता है :

Science

- Content, process and language of science teaching must be commensurate with the learner's age-range and cognitive reach.
- Science teaching should engage the learners in acquiring methods and process that will nurture their curiosity and creativity, particularly in relation to the environment.
- Science teaching should be placed in the wider context of children's environment to equip them with the requisite knowledge and skills to enter the world of work.
- Awareness of environmental concerns must permeate the entire school curriculum.

विज्ञान

- विज्ञान की भाषा, प्रक्रिया एवं विषयवस्तु विद्यार्थी को उम्र और उसकी ज्ञान की सीमा के अनुकूल होनी चाहिए।
- विज्ञान शिक्षा को विद्यार्थियों को उन तरीकों एवं प्रक्रियाओं को बोध कराने में सक्षम होना चाहिए जो उनकी रचनात्मकता और जिज्ञासा को संपोषित करने वाली हों, विशेषकर पर्यावरण के संदर्भ में।
- विज्ञान की शिक्षा को बच्चों के परिवेश के व्यापक संदर्भ के अनुकूल होना चाहिए ताकि उनमें काम के संसार में प्रवेश करने लायक जरूरी ज्ञान एवं कौशल विकसित हो सकें।
- पर्यावरण चिंताओं के प्रति जागरूकता को संपूर्ण स्कूली पाठ्यचर्य में व्याप्त होना चाहिए।

Social Sciences

- Social science content needs to focus on conceptual understanding rather than lining up facts to be memorised for examination, and should equip children with the ability to think independently and reflect critically on social issues.
- Interdisciplinary approaches, promoting key national concerns such as gender, justice, human rights, an sensitivity to marginalised groups and minorities.
- Civics should be recast as political science, and the significance-of history as a shaping influence on the children's conception of the past and civic identity should be recognised.

सामाजिक विज्ञान

- सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु में अवधारणात्मक समझ पर ध्यान दिए जाने की जरूरत है बजाए इसके कि बच्चों के सामने परीक्षा के लिए रटने वाली सामग्री का अबार खड़ा कर दिया जाए। इससे उनमें सामाजिक मुद्दों पर स्वतंत्र तथा आलोचनात्मक रूप से सोचने का अवसर मिलेगा।
- प्रमुख राष्ट्रीय चिंताओं; जैसे - लैंगिक न्याय, मानव अधिकार और हाशिए के समूहों तथा अल्पसंख्यकों के प्रति संवेदनशीलता को विकसित किए जाने के लिए अंतः अनुशासनात्मक दृष्टिकोण अपनाए जाने की जरूरत है।
- नागरिक शास्त्र को राजनीतिशास्त्र में तब्दील कर दिया जाए, तथा इतिहास को बच्चों की अतीत तथा नागरिकता की पहचान को अवधारणा पर प्रभाव डालने वाले विषय के रूप में पहचाना जाए।

Work

- School curricula from the pre-primary stage to the ... senior secondary stage need to be reconstructed to realise the pedagogic potential of work as a pedagogic medium in knowledge acquisition, developing values and multiple-skill formation.

Art

- Arts (folk and classical forms of music and dance, visual arts, puppetry, clay work, theatre, etc.) and heritage crafts should be recognised as integral components of the school curriculum.
- Awareness of their relevance to personal, social, economic and aesthetic needs should be built among parents school authorities and administrators.
- The arts should comprise a subject at every stage of school education.

काम

- पूर्व-प्राथमिक से लेकर उच्च माध्यमिक स्तर तक स्कूली पाठ्यचर्या को पुनर्गठित किए जाने की आवश्यकता है जिसमें ज्ञान अर्जन, मूल्यों का विकास और बहुविध कौशलों के निर्माण के संदर्भ में काम की शिक्षाशास्त्रीय संभावनाओं को देखा जा सके।

कला

- कलाओं (संगीत, नृत्य, दृश्यकलाएँ, कठपुतली कला, मिट्टी की कला, नाटक आदि के लोक तथा शास्त्रीय रूपों) और धरोहर शिल्पों को पाठ्यचर्या में समेकित घटकों के साथ में मान्यता।
- वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक और सौंदर्यात्मक आवश्यकताओं के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता के बारे में माता—पिता, स्कूली अधिकारियों और प्रशासकों में जागरूकता पैदा करना।
- कला को स्कूली शिक्षा के हर स्तर पर शामिल किए जाने पर बल।

Peace

- Peace-oriented values should be promoted in all subjects throughout the school years with the help of relevant activities
- Peace education should form a component of teacher education.

Health and Physical Education

- Health and physical education are necessary for the overall development of learners. Through health and physical education programmes (including yoga), it may be possible to handle successfully the issues of enrolment, retention and completion of school.

Habitat and Learning

- Environmental education may be best pursued by infusing the issues and concerns of the environment-meegesse ri per all levels while ensuring that adequate time is earmarked for pertinent activities.

शांति

- स्कूली शिक्षा के दौरान उपयुक्त गतिविधियों के माध्यम से सभी विषयों में शांति के मूल्यों का संवर्धन।
- शांति के लिए शिक्षा को शिक्षक-प्रशिक्षण का भी एक अवयव बनाया जाना चाहिए।

स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा

- विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए आवश्यक हैं स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा के अध्ययन से स्कूल ने नामांकन, उपस्थिति एवं ठहरीव आदि की समस्या से निपटा जा सकता है।

आवास और अधिगम

- पर्यावरण शिक्षा सबसे अच्छी तरह विभिन्न अनशासनों की शिक्षा के साथ उसके मुद्दों और चिंताओं को सभी स्तरों पर जोड़कर दी जा सकती है। परंतु इसमें यह ध्यान देना आवश्यक है कि संबंधित गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय दिया जाए।

School and Classroom Environment

- Availability of minimum infrastructure and material facilities, and support for planning a flexible daily schedule, are critical for improved teacher performance.
- A school culture that nurtures children's identities as learners' enhance the potential and interests of each child.
- Specific activities ensuring participation of all children-abled and disabled - are essential conditions for learning by all.
- The value of self-discipline among learners through - democratic functioning is as relevant as ever.

विद्यालय एवं कक्षा का वातावरण

- शिक्षकों के प्रदर्शन को सुधारने के लिए ढांचागत और भौतिक सामग्री की न्यूनतम उपलब्धता और दैनिक योजना को लचीला बनाना आवश्यक है।
- बच्चों को सीखने वालों के रूप में पहचानने वाली स्कूली संस्कृति हर बच्चे की रुचियों और उसे संभावनाओं को और अधिक समृद्ध करती है।
- ऐसी विशिष्ट गतिविधियों का आयोजन जिसमें सक्षम और विभिन्न अक्षमताओं को झेल रहे बच्चे भी भाग ले सकें। यह सबके सीखने के लिए एक अनिवार्य शर्त है।
- लोकतांत्रिक तरीके द्वारा बच्चों में स्व-अनुशासन का विकास हमेशा ही प्रासंगिक रहा है।

- Participation of community members in sharing knowledge and experience in a subject area helps in forging a partnership between school and community
- Reconceptualisation of learning resources in terms of
 - textbooks focused on elaboration of concepts, activities, problems and exercises encouraging reflective thinking and group work.
 - supplementary books, workbooks, teacher's handbooks, etc. based on fresh thinking and new perspectives.
 - multimedia and ICT as sources for two-way inter

- ज्ञान की प्रक्रिया में समुदाय के लोगों को शामिल किए जाने से स्कूल और समुदाय में साझेदारी होने लगती है।
- सीखने के लिए जरूरी संसाधनों के बारे में इस संदर्भों में पुनर्विचार की आवश्यकता-
- पाठ्यपुस्तकों में अवधारणाओं की व्याख्या, गतिविधियाँ, समस्याएं और अभ्यास इस तरह से दिए गए हों कि वे उससे संबंधित चिंतन और समूह कार्य को बढ़ावा देने वाले हों।
- सहायक पुस्तकें, कार्यपुस्तिकाएं, शिक्षकों के लिए मार्गदर्शिकाएं आदि अभिनव चिंतन और नयी दृष्टियों पर आधारित हों।